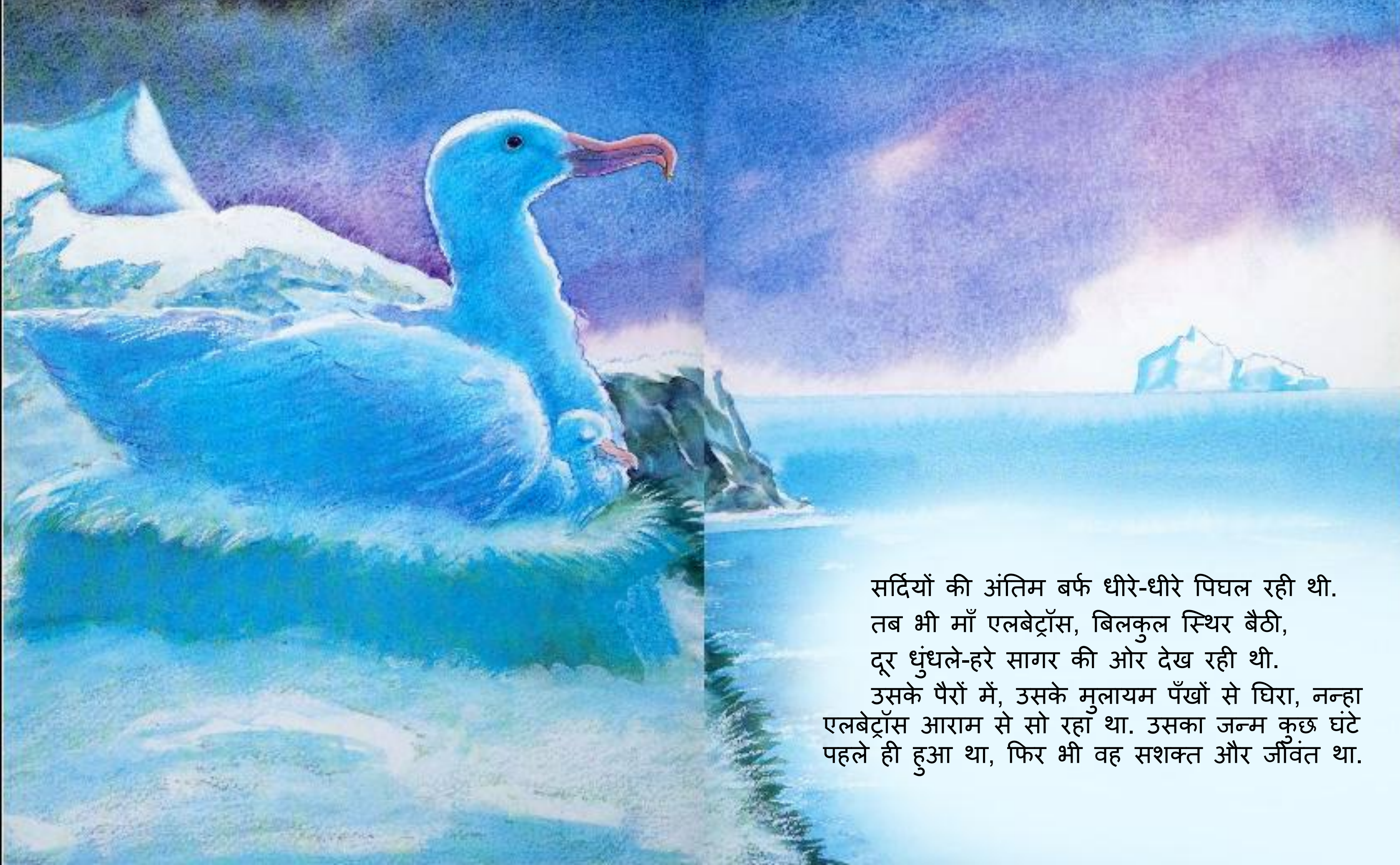


नन्हा एलबेट्रॉस



नन्हा एलबेट्रॉस



सर्दियों की अंतिम बर्फ धीरे-धीरे पिघल रही थी. तब भी माँ एलबेट्रॉस, बिलकुल स्थिर बैठी, दूर धुंधले-हरे सागर की ओर देख रही थी.

उसके पैरों में, उसके मुलायम पँखों से घिरा, नन्हा एलबेट्रॉस आराम से सो रहा था. उसका जन्म कुछ घंटे पहले ही हुआ था, फिर भी वह सशक्त और जीवंत था.



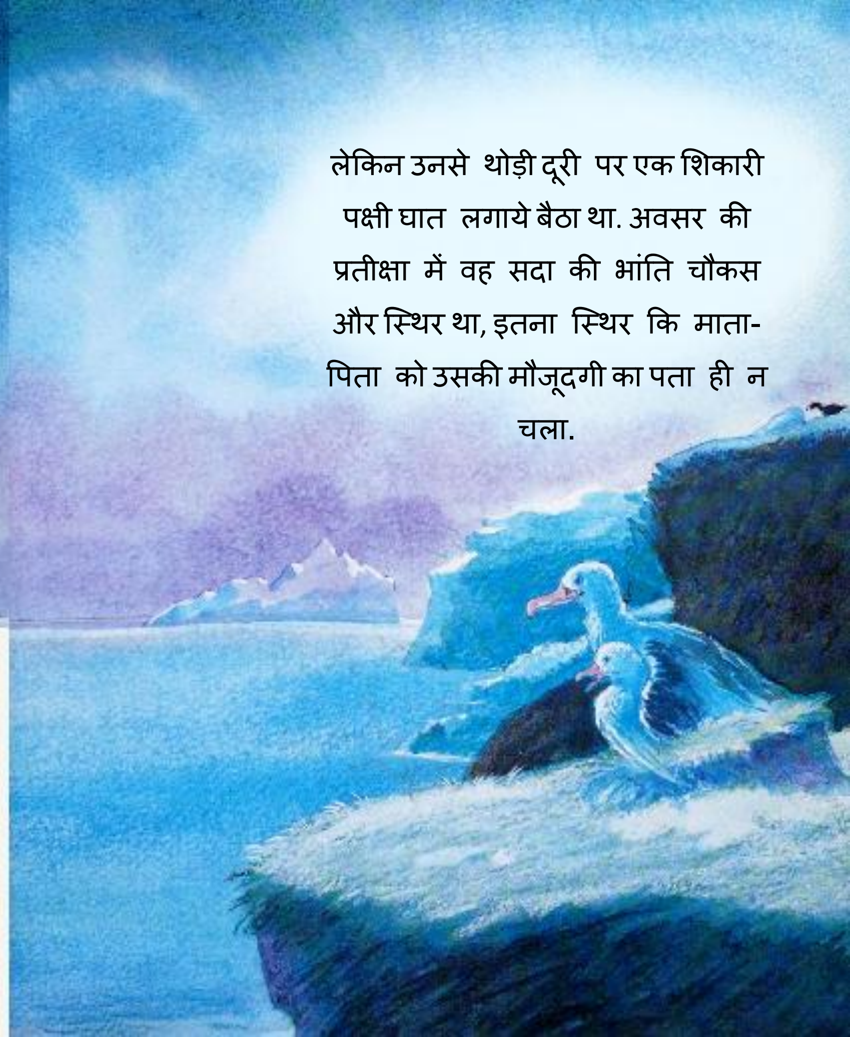
बहुत दूर सागर की लहरों के ऊपर पिता एलबेट्रॉस उड़ान भर रहा था. उसके विशाल पँख फड़फड़ा रहे थे, वह घर वापस आ रहा था. उसने बहुत सी मछलियाँ पकड़ कर निगल रखी थीं.

“तुम्हारा स्वागत है!”
माँ एलबेट्रॉस ने कहा, एक माँ समान वह गौरवान्वित थी.
नींद में सपने देखते हुए भी नन्हें एलबेट्रॉस ने पहली बार मछली को सूँघा.
“मुझे मछली दो, बाबा,”
उसने कहा. “मछली दो.”
“तुम्हें खाना देने के लिए ही तो हम यहाँ हैं,” पिता एलबेट्रॉस ने कहा.
नन्हा एलबेट्रॉस जितना खा सकता था उतना उसने खाया और फिर सो गया.



उसके बाद माँ और पिता बारी-बारी घोंसले से जाते. एक मछलियाँ पकड़ने जाता तो दूसरा घोंसले पर बैठा रहता और अपने पैरों में छिपा कर नन्हें एलबेट्रॉस को गर्म और सुरक्षित रखता.

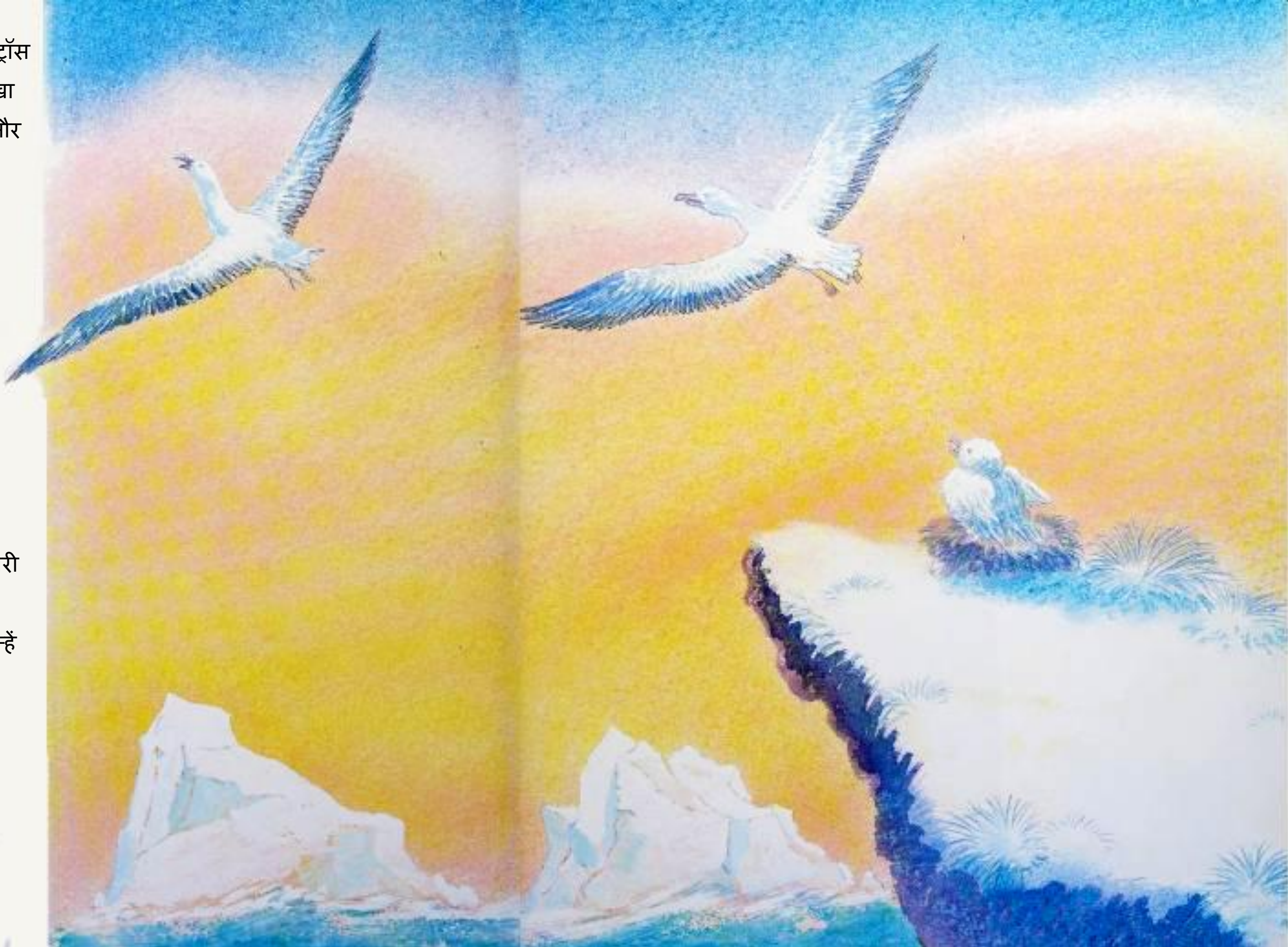
दिन पर दिन, खूब खाना खाकर, माता-पिता का प्यार और अच्छी सुरक्षा पाकर नन्हा एलबेट्रॉस बड़ा और शक्तिशाली होता गया. उसे खूब भूख लगती और वह बहुत शोरगुल करता. उसके शरीर पर सफेद मुलायम पर भी निकल रहे थे. उसके पँख लंबे, चौड़े और सुंदर हो गए थे.



लेकिन उनसे थोड़ी दूरी पर एक शिकारी पक्षी घात लगाये बैठा था. अवसर की प्रतीक्षा में वह सदा की भांति चौकस और स्थिर था, इतना स्थिर कि माता-पिता को उसकी मौज़ूदगी का पता ही न चला.

फिर एक दिन माता एलबेट्रॉस
और पिता एलबेट्रॉस ने देखा
कि नन्हा एलबेट्रॉस बड़ा और
मज़बूत लग रहा था. उन्हें
लगा कि अब उसे अकेले
छोड़ कर इकट्ठे
मछलियाँ पकड़ने जाने में
कोई खतरा न था.
वह एक साथ उड़ चले
पहाड़ की चोटी के ऊपर,
उड़ने वाला गीत गाते
हुए, वो गीत जो एलबेट्रॉस
उड़ते समय गाते हैं.
उन्होंने नीचे बैठे हुए शिकारी
पक्षी को न देखा.
लेकिन शिकारी पक्षी ने उन्हें
जाते हुए देख लिया था.
वह देख रहा था.
वह प्रतीक्षा कर रहा था.





“ओ बाबा! ओ माँ!”
नन्हा एलबेट्रॉस चिल्लाया.
उसे अकेला छोड़ कर वह
कभी न गए थे.
“लौट आओ! लौट आओ!”
लेकिन हवा चीख रही थी
और लहरें गरज रही थीं.
माता-पिता उसकी पुकार
सुन न पाये. हिलोरें मारते
सागर के ऊपर वह उड़ते
रहे, और नीचे सागर में
तैरती मछलियों को ध्यान
से खोजते रहे. शिकार करने
के लिए मछलियों की एक
झलक ही उन्हें चाहिए थी.



वह नीचे आए, मछली
पकड़ने के लिए धुँधले-हरे
सागर में डुबकी लगाई.
फिर पानी से बाहर
आए, और लहरों पर
तैरते हुए, जो मछलियाँ
पकड़ी थीं उन्हें निगलने लगे.

उस रात नन्हा एलबेट्रॉस
घोंसले में अकेले ही
सोया. चालाकी से धीरे-धीरे
निकट आते शिकारी पक्षी
को उसने नहीं देखा.

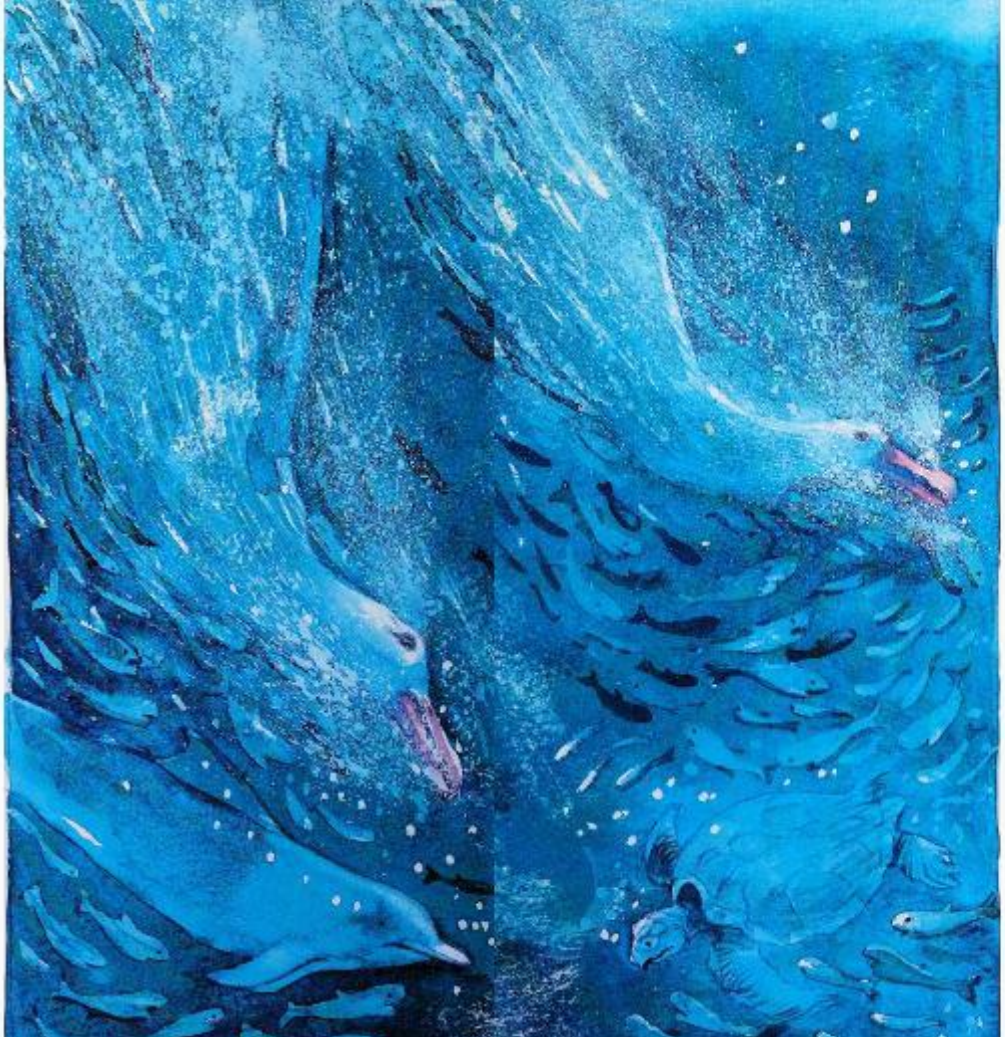


जब सुबह हुई,
माँ और पिता एलबेट्रॉस
तब भी सागर के ऊपर
एक साथ उड़ रहे थे.
धुँधले-हरे सागर के
बहुत ऊपर वह उड़ चले
और तब मछुआरों की एक
नाव उन्हें नीचे दिखाई दी.
देखो! नाव के पीछे हज़ारों
चमकती हुई मछलियाँ
आ रही हैं. आज तो
दावत होगी!

बिना कुछ सोचे वह उसी
पल नीचे उमड़ते सागर
की ओर आए. वह एक के
बाद एक मछली निगलने
लगे. फिर वह तैर कर
ऊपर आए, ऊपर प्रकाश
और हवा की ओर.



लेकिन उन्हें पता न था
कि उनके आसपास फैले
मछली पकड़ने वाले जाल
खींच कर नाव के ऊपर
लाये जा रहे थे.
वह जालों को तब तक न देख
पाये जब तक वह तैर कर
उनके अंदर नहीं चले गए और
फंस नहीं गए. जाल से
बाहर निकलने का कितना
प्रयास उन्होंने किया. कितना
संघर्ष उन्होंने किया.
लेकिन जितना अधिक संघर्ष
और प्रयास उन्होंने किया
उतना ही वह जाल में
और फंसते गए.
जाल में फंसे हुए वह बेबस
हो गए. वह अकेले न थे.
उनके आसपास जिद्दोजहद करती
हज़ारों मछलियाँ ही नहीं थीं,
कुछ डॉल्फिन और कछुए
भी जालों में फंसे हुए थे.



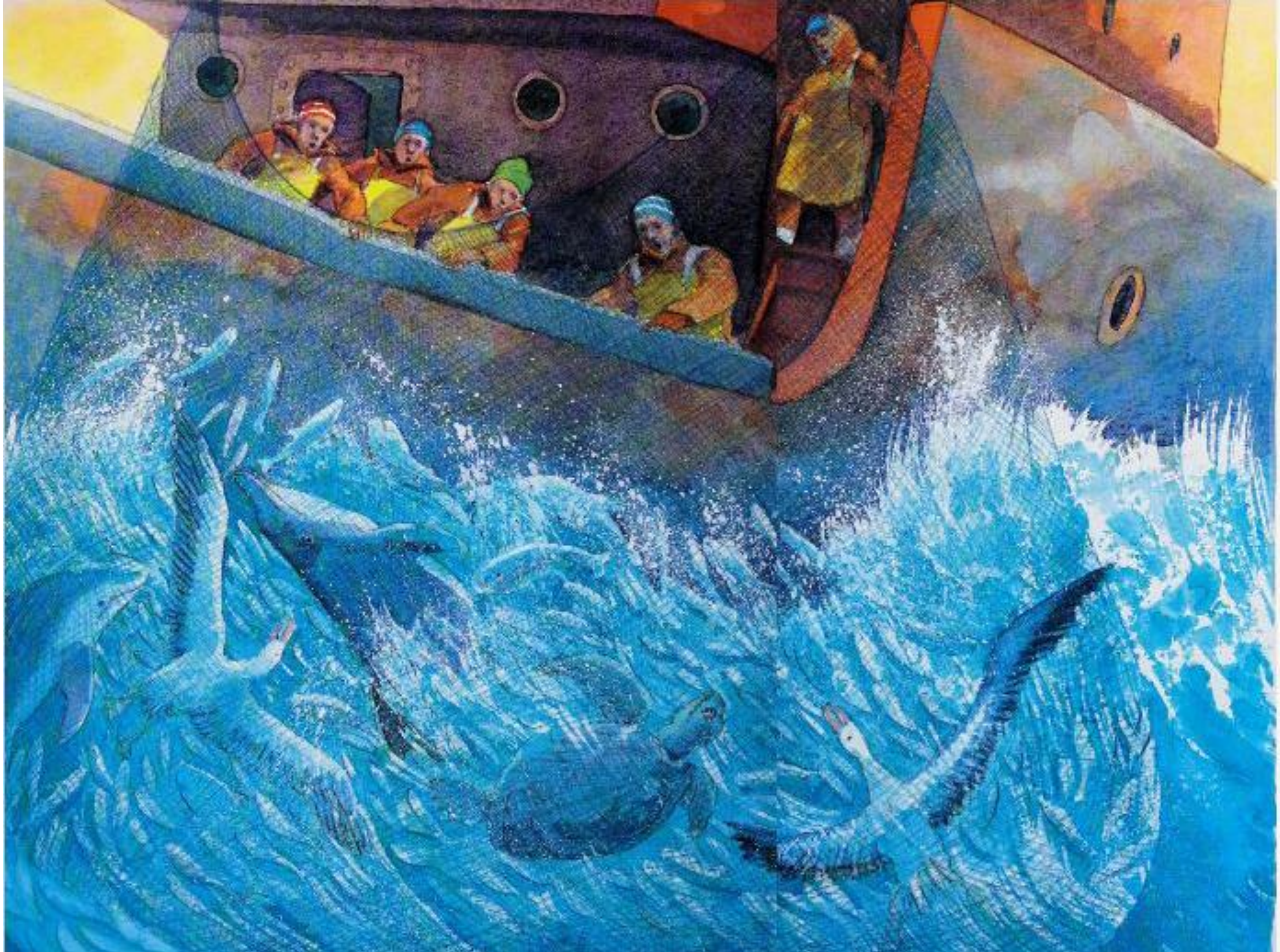
इस बीच.....
पहाड़ी की चोटी पर
शिकारी पक्षी चोरी-चोरी
निकट आता गया.
बहुत निकट.



और अभी तक
नन्हें एलबेट्रॉस ने
उसे देखा न था.

पिता एलबेट्रॉस और माँ एलबेट्रॉस जाल में फंसे हुए थे.
वह जीवित थे पर कुछ ही समय के लिए. जब सागर की गहराइयों से उन्होंने विशाल शार्क की धुँधली छाया को ऊपर आते देखा तो उन्होंने जाल से निकलने का एक अंतिम प्रयास किया. क्रोध और लालच में शार्क ने जाल पर हमला किया और अपनी भयंकर ताकत से जाल को चीरने का प्रयास किया.





पर उससे देर हो गई थी क्योंकि मछुआरे पहले ही जालों को ऊपर खींचने लगे थे.

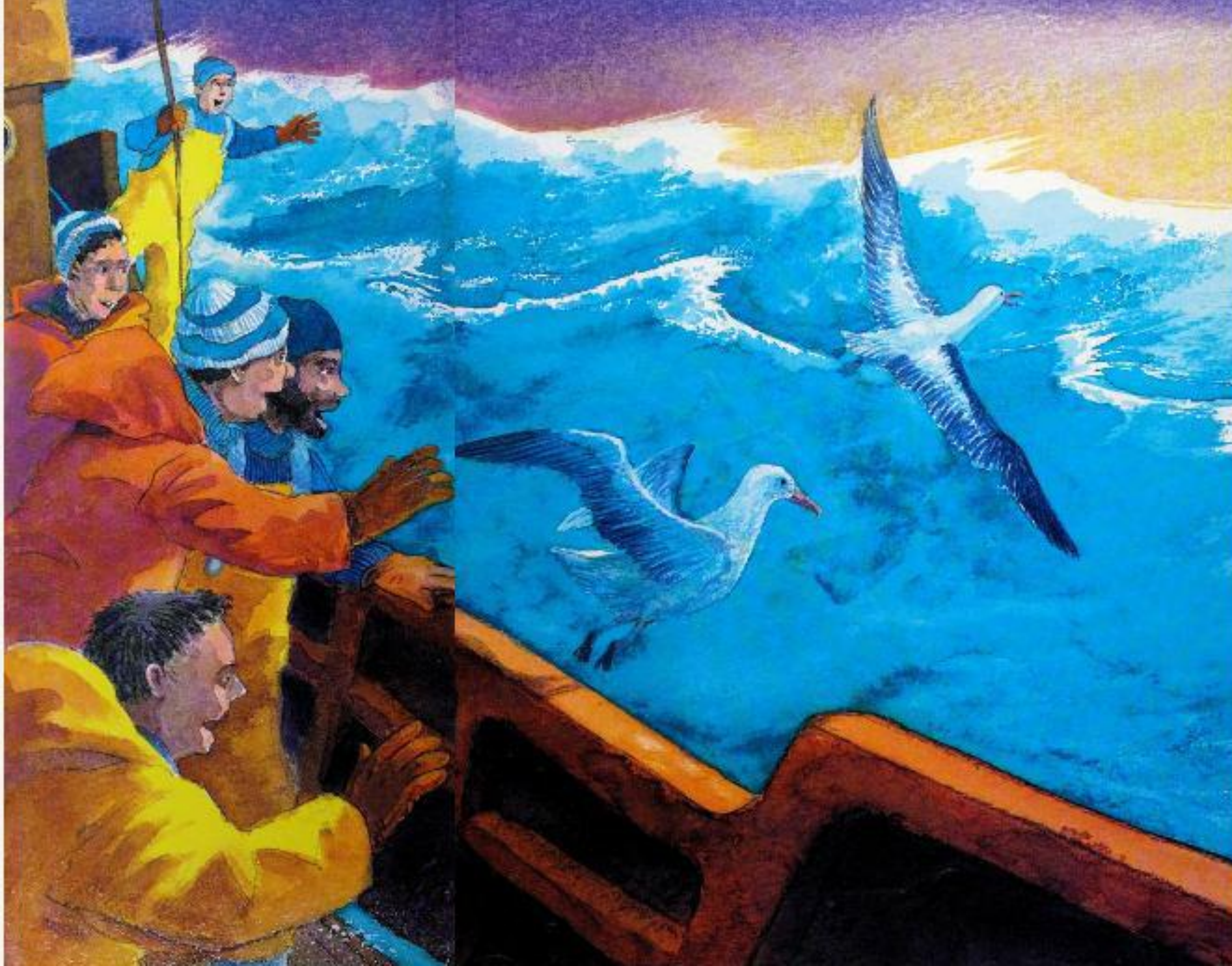
हज़ारों मछलियों से भरे हुए जाल पानी में ऊपर आए और फिर बाहर आ गए.

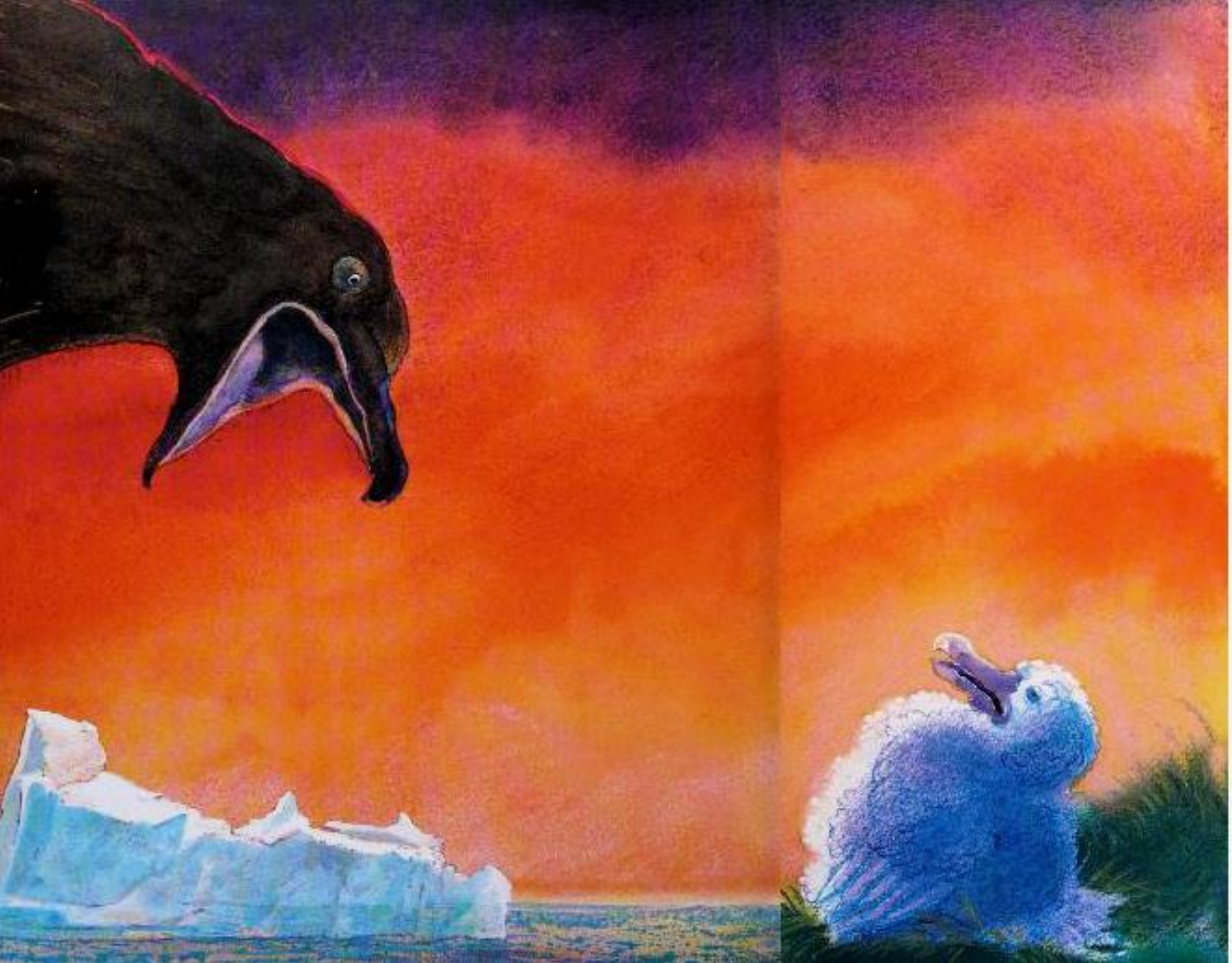
और उन में फंसे थे
कई कछुए और कुछ
डॉल्फिन और माँ
एलबेट्रॉस और
पिता एलबेट्रॉस.

जैसे ही मछुआरों ने उन्हें देखा उन्होंने दोनों पक्षियों को जाल से बाहर निकाल दिया. वह तुरंत समझ गए कि पक्षी इतने थके हुए थे कि वह उड़ न सकते थे. मछुआरों ने उन्हें अपनी नाव पर आराम करने दिया.



नाविकों ने उनकी देखभाल की और उन्हें खाना दिया ताकि वह फिर से शक्तिशाली हो जायें. शाम के समय जब वह उड़ कर नाव से जाने लगे, सारे नाविक उन्हें अलविदा कहने के लिए इकट्ठे हो गए.





अब शिकारी पक्षी नन्हें
एलबेट्रॉस के चारों ओर
चक्कर लगा रहा था.
उसे मारने के लिए वह
आगे बढ़ रहा था.
उसने बहुत प्रतीक्षा
कर ली थी.
नन्हें एलबेट्रॉस ने उसे आते
देख लिया और देखा कि
उसकी आँखों में एक घातक
चमक थी.

"ओ माँ!
ओ बाबा!"
वह चिल्लाया.
"मेरी मदद करो!
मेरी मदद करो!"



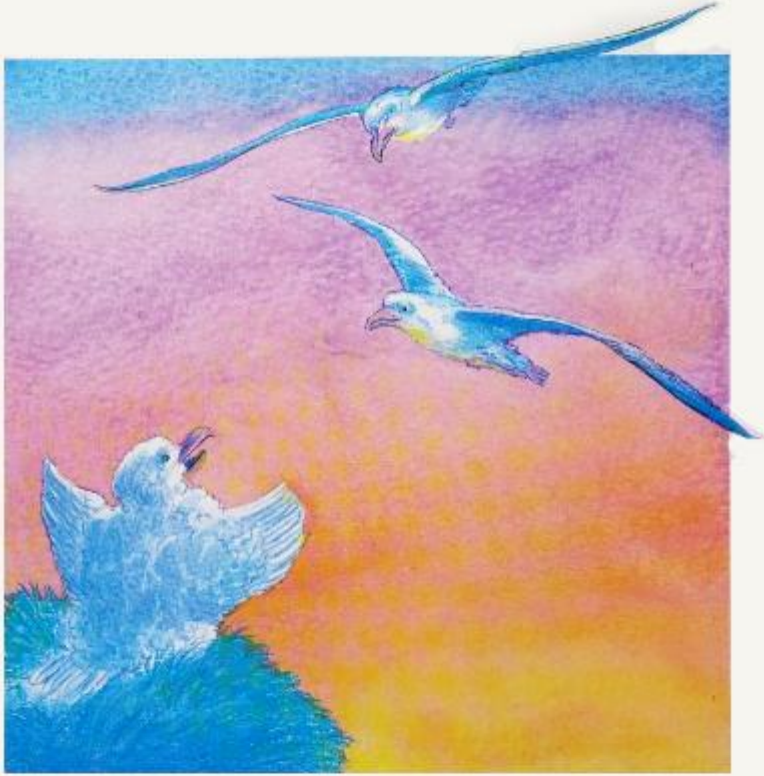
अचानक ऊपर आकाश से
दिल दहला देने वाली एक चीख
सुनाई दी. माँ एलबेट्रॉस और
पिता एलबेट्रॉस आकाश से नीचे
आए. और एक सफेद, चमकदार
तीर की भांति उन्होंने हत्यारे
पक्षी पर हमला किया.

शिकारी पक्षी समझ गया कि
वहाँ रुकना मौत को न्योता देने
समान होगा.

उसी पल वह उड़ कर भाग
गया. माँ और पिता ने सागर
के ऊपर बहुत दूर तक उसका
पीछा किया.

उसे तब तक परेशान किया
जब तक उन्हें विश्वास नहीं हो
गया कि वह लौट कर कभी न
आयेगा.





जब वह नन्हें एलबेट्रॉस के पास वापस आए, वह ऊपर-नाचे उछल रहा था और उन्हें देखने और खाने के लिए उतावला हो रहा था. लेकिन वह नाराज़ भी था.

"ओ बाबा! ओ माँ!" वह चिल्लाया. "मैं कब से आपकी राह देख रहा था. मैं इतना डरा हुआ था, इतना भूखा था. आप कहाँ चले गए थे? आप क्यों कर रहे थे?"

"यह एक लंबी कहानी है," पिता एलबेट्रॉस ने कहा.

"तुम्हें अकेला छोड़ कर अब हम कभी नहीं जायेंगे," माँ एलबेट्रॉस ने कहा. "वचन देते हैं."

"मुझे खाना दो, बाबा! मुझे खाना दो, माँ," नन्हें एलबेट्रॉस ने कहा.

और दोनों ने उसे खाना दिया और नन्हा एलबेट्रॉस तब तक खाता रहा जब तक उसका पेट नहीं भर गया.





फिर वह सो गया.
और जब वह सो रहा था, बर्फ गिरी.
और उनके गीत के स्वर धुँधले-हरे सागर पर
लहराने लगे, यह घुमक्कड़ एलबेट्रॉस का गीत था.



समाप्त

